श्री धान से धन्य किसान

मैं शिवेन्द्र सिंह आत्मज जगदीश सिंह ग्राम मतहा जिला सतना का छोटा सा किसान
हूँ। मेरे पास मात्र 2.50 एकड़ कृषि भूमि है और पानी के साधन का अभाव है। इस कारण धान की खेती के लिये सदैव ही ईश्वर द्वारा की जाने वाली वर्षा पर ही निर्भर रहता था। परंतु कृषि अभियांत्रिकी विभाग सतना की योजनाओं को अपनाकर वर्ष 2010 में मैने अपने खेतों की गर्मी की जुताई कराई। इस जुताई के कारण प्रारंभिक वर्षा में ही मेरे खेत नरम और नमीयुक्त हो गये थे। इस बार मैने अपने एक एकड़ कृषि क्षेत्र में धान , एक एकड़ में सोयाबीन और शेष भूमि पर सब्जियां लगाने का इरादा बनाया था।
कम पानी के कारण धान के लिये मचौआ करना कठिन था और वर्षा भी लंबी प्रतीक्षा करा रही थी । अतः मैने 2 किलो धान बीज का रोपा तैयार किया और धान के खेत की जुताई कर रोटावेटर से खेत तैयार कर लिया। पर्याप्त वर्षा नहीं थी, परंतु खेत मख्खन जैसा जुता हुआ था। इसमें श्री मार्कर से निशान लगा कर दस दिन का रोपा एक-एक पौधे की दर से लगा दिया। वर्षा का अभाव था, परंतु खेत की गर्मी की जुताई के कारण नमी बनी हुई थी और खरपतवार भी अधिक नहीं थी। मेरे गांव के ही एक किसान ने पिछले वर्ष 40 क्विंटल एकड़ की दर से धान का उत्पादन प्राप्त किया था , जबकि हम लोग 16-17 क्विंटल एकड़ से अधिक का उत्पादन कभी नही ले पाये थे। इस बार मैनें भी अभियंत्रीकृत कृषि अपना कर धान का उत्पादन बढ़ाने का प्रयास किया था। गहाई के बाद नतीजा भी बेहतर मिला क्योंकि एक एकड़ से मुझे 36 क्विंटल धान प्राप्त हुई थी।
जिस एक एकड़ में सोयाबीन लगाई थी , वहां भी गर्मी की जुताई हुई थी। इस कारण वहां भी खेत नरम और नमीयुक्त थे । जुताई के पहले सप्ताह में ही मैने कृषि अभियांत्रिकी विभाग सतना की रिजफरो सीड़ कम फर्टिलाईजर ड्रिल से सोयाबीन की बोनी कर दी। बीज उपचार और पूरा उर्वरक आदान देना मुझे याद रहा। खेत में खरपतवार कम रहे और बीज अंकुरण भरपूर हुआ क्योंकि बीज मेड़ों पर बोये गये थे। पहली बार खाद को बीजों के नीचे रख कर बोनी की थी । बेहतरीन फसल आई और 14-14 इंच की पर्याप्त दूरी की कतारों के कारण इल्ली भी नियंत्रित रही। गहाई के बाद मुझे 10 क्विंटल सोयाबीन

प्राप्त हुई जो पूर्व वर्षों की तुलना में दोगुनी थी। इस अच्छी फसल से प्राप्त लाभों का उपयोग करते हुये मैने अपने खेत में अब ड्रिप सिंचाई सिस्टम भी लगवा लिया है और अब तो पूरी तरह अभियंात्रिकृत खेती करने लगा हूँ। अभियांत्रिकृत खेती करने से फसल मौसम की भार भी झेल लेती है , जैसे पानी न गिरने पर भी रिजफरो पद्धति के सोयाबीन में नमी की कमी नहीं हुई । और ड्रिप सिंचाई के कारण आलू की सब्जी फसल पर पाले का प्रकोप नही हुआ। साथ ही पानी की कमी के बाद भी धान का उत्पादन दो गुना से भी अधिक हो सका।

(शिवेन्द्र सिंह जगदीश सिंह)
ग्राम मतहा जिला सतना

अभियंत्रीकृत कृषि से छू लिये सफलता के शिखर

सतना जिला मुख्यालय से लगभग 17 किमी की दूरी पर सतना-रीवा मार्ग पर मेरा छोटा सा गांव है - मतहा। हम सभी ग्राम वासी मुख्यतः कृषि व्यवसाय से जुडे़ हैं , परंतु लगातार खेती में होने वाले घाटे के कारण पास ही स्थित सीमेण्ट फैक्ट्रियों में मजदूरी करने भी गांव के लोग जाना प्रारंभ कर दिये थे। परंतु खेती का मोह बार-बार खेतों की ओर भी आकर्षित करता था।
मैं सुखेन्द्र सिंह आत्मज श्री रामलाल सिंह इसी गांव मतहा में 4 एकड़ कृषि भूमि का काश्तकार हूँ। इसमें से मात्र 2.50 एकड़ भूमि में ही खेती कर सकता था क्योंकि पानी की कमी और अनुपजाऊ प्रवृत्ति के कारण शेष डेढ़ एकड़ में खेती नही हो पाती थी । ऐसे में कृषि अभियांत्रिकी विभाग सतना के कर्मचारी अपनी योजनायें लेकर गांव में आये तो उन्हें अपनाने में मैने अपने खेतों की गहरी जुताई कराई और उसमें ढेंचा नामक हरी खाद के बीज बो दिये । वर्षा प्रारंभ होते ही यह हरी खाद खेतों में उत्पन्न हो गई । ग्रीष्म कालीन जुताई के कारण मेरे खेत नरम थे और शुरूआती वर्षा में ही उनमें पर्याप्त नमी एकत्रित हो गई थी। अतः जब आसपास के क्षेत्रों के दूसरे किसान खेतों में बतर आने के लिये पर्याप्त वर्षा होने की प्रतीक्षा कर रहे थे , मैं अपने खेतों में फसल बोने के लिये तैयार था। कृषि अभियांत्रिकी विभाग के रोटावेटर की सहायता से हरी खाद ढेंचा को खेत में ही मिला कर मैनें जुलाई 2010 के प्रथम सप्ताह में ही 2 एकड़ खेत (0.809 हेक्टर) में सोयाबीन की बोनी कर दी ।

इसमें मेरा वह डेढ़ एकड़ का क्षेत्र भी सम्मिलित था , जो पूर्व में अनुपजाऊ था । परंतु गर्मी की गहरी जुताई और ढेंचा के कारण अब उपयुक्त प्रतीत हो रहा था। इस दो ए कड़ में कुल 45 किलो बीज कृषि अभियांत्रिकी विभाग के रिजफरो सीड़ कम फर्टिकलाईजर ड्रिल से बोया। इसमें बीज मेड़ पर बोया जाता है और कूड़ों में नमी का संग्रहण होता है। वैज्ञानिकों द्वारा सुझाये गये बीज उपचार तथा उर्वरक आदान का पूरा - पूरा प्रयोग किया तथा सोयाबीन को 14 - 14 इंच की दूरी पर कतारों में बोया। पर्याप्त दूरी की कतारों में लगी सोयाबीन इल्ली के प्रकोप से कुप्रभावित नही हुई और गर्मी की गहरी जुताई के कारण खरपतवार भी अधिक नही हुये। और जब कृषि अभियांत्रिकी विभाग सतना के मल्टीक्राप थ्रेशर से गहाई कराई , तो कुल 21 क्विंटल सोयाबीन प्राप्त हुई। यह अत्यंत उत्साह वर्धक था , क्योंकि गतवर्ष मुझे इस क्षेत्र से मात्र 10 कि्ंवटल सोयाबीन ही प्राप्त हुई थी। मेरा उत्पादन दुगना हो गया था।
मेरे शेष बचे 2 एकड़ खेत में धान और सब्जियां लगानी थी। उसमें भी अभियंत्रीकृत कृषि अपना कर मैने अच्छी सफलता पाई। उसकी कहानी आगे के पृष्ठों में।

(सुखेन्द्र सिंह रामलालसिंह)
ग्राम मतहा जिला सतना

इस बार की सोयाबीन

मैं मथुरा सिंह आत्मज बद्री सिंह ग्राम मतहा जिला सतना का किसान हूँ । गांव में मेरे पास लगभग 15 एकड़ कृषि भूमि है और अपने आदरणीय पिताजी तथ परिश्रमी अनुज के साथ सदैव ही खेती में भरपूर मेहनत करता हूँ। इस मेहनत के बाद भी 4-5 क्विंटल ए कड़ से अधिक की सोयाबीन प्राप्त नहीं हो रही थी , जबकि 35-40 किलो एकड़ के हिसाब से हर साल बीज लग जाता था । इस बार मैने सोयाबीन का क्षेत्र कम कर मात्र 7 ए कड़ (2.834 हेक्टर) में ही सोयाबीन लगाने का निश्चय किया। इस बार कृषि अभियांत्रिकी विभाग , सतना अपनी तकनीकि के साथ हमारे गांव में था और वे लोग रिज-फरो सीड़ कम फर्टिलाईजर ड्रिल और रेज्डबेड़ प्लांटर से गांव में सोयाबीन-अरहर आदि लगा रहे थे। मैनें भी अपने खेतों की गर्मी की गहरी जुताई कृषि अभियांत्रिकी विभाग से कराई थी और प्रारंभिक वर्षा में ही मेरा नरम और नमीयुक्त खेत सोयाबीन की बोनी के लिये तैयार था। मैने अनुदान पर जीरो टिल सीड कम फर्टिलाईजर ड्रिल क्रय करके उससे बोनी करने का निश्चय किया। एक तो इस उपकरण द्वारा खाद को बीज के नीचे बोना संभव था। फिर इस उपकरण में सी टाईप कुसिया (शू) नही रहता है, बल्कि ब्लेड रहती है। इस कारण बोते समय खेत एक लेवल पर रहता है। (अन्यथा जहां-जहां बीज बोते वहां नालियां बन जाती थीं) । ब्लेड के कारण वर्षा के कारण ऊपरी परत के सख्त होने के खतरे से सोयाबीन बीज का अंकुरण प्रभावित नहीं होना था , क्योंकि नालियां नहीं बनी थीं। अच्छे अंकुरण की आशा में मैने 7 एकड़ में लगभग डेढ़ क्विंटल बीज ही बोया , जो वैसे पौने तीन क्विंटल तक लगता । पिछली बार तो मैं सोयाबीन की फसल से बीज लायक मात्रा भी नहीं निकाल सका था , सो इस बार की बोनी में बीज की बचत भी की । कतार से कतार की दूरी 14-14 इंच रखी। गर्मी की जुताई के कारण खरपतवार अधिक नही थी और आवश्यकतानुसार सोयाबीडर नामक हस्तचलित उपकरण का प्रयोग कर निंदाई गुड़ाई का कार्य करते रहे। चूंकि रासायनिक खरपतबार नाशकों का प्रयोग नहीं करना था, इस कारण सोयाबीन के खेतों में कुछ पौधे मक्का के भी तैयार होने दिये। मक्का के पौधों पर भुट्टों से आकर्षित चिड़िया के कारण सोयाबीन पर इल्ली का प्रकोप भी नहीं हुआ। अच्छी फसल

खेतों में लहलहा उठी। फसल काटने के लिये मैने सेल्फ प्रोपेल्ड रीपर भी अनुदान पर क्रय कर लिया । जब फसल काटी गई और उसकी गहाई हुई तो मुझे कुल 80 क्विंटल सोयाबीन प्राप्त हुई। जबकि पिछले वर्षों में अपने पूरे खेतों में सोयाबीन लगाकर भी मैं इसका आधा उत्पादन भी प्राप्त नही कर पा रहा था। परंतु इस बार की सोयाबीन ने सारी शिकायतें दूर कर दीं। कृषि अभियांत्रिकी विभाग ने प्रदर्शन हेतु एक स्पाईरल सेपरेटर गांव में दिया था। सभी किसानों की तरह मैनें भी इसका प्रयोग कर अपनी सोयाबीन की ग्रेडिंग कर ली है। अब गुणवत्ता के अनुसार कीमत लेकर सोयाबीन बेची है और इतना लाभ प्राप्त किया है, कि पुराने घाटे भी पूरे हो गये हैं।
(मथुरा सिंह बद्री सिंह)
ग्राम मतहा जिला सतना

रिज-फरो की सोयाबीन

मैं छोटे लाल आत्मज वंशधारी सिंह ग्राम मतहा जिला सतना का किसान हूँ। मेरे
पास लगभग साढे़ तीन एकड़ कृषि योग्य भूमि है। इसमें से आधे एकड़ में खरीफ 2010 में मैनें घरेलू उपयोग हेतु धान लगाई थी। शेष तीन एकड़ में सदा की भांति खरीफ की सोयाबीन फसल लेनी थी। पूर्व के वर्षों में इस तीन एकड़ खेत से लगभग 12-15 क्विंटल सोयाबीन मैं प्रतिवर्ष में उत्पादित कर लेता था। इस बार कृषि अभियांत्रिकी विभाग सतना अपनी तकनीकि और मशीनें लेकर हमारे गांव में था। उनसे मैनें गर्मी की जुताई करवाई थी। प्रारंभिक वर्षा में मेरे नरम और नमीदार खेत बोवनी के लिये तैयार थे। कृषि अभियांत्रिकी विभाग ने अपनी रिजफरो सीड कम फर्टिलाईजर ड्रिल से 14-14 इंच की कतारों में सोयाबीन की बोवनी कर दी । इस पद्धति मंे बीज ऊंची उठी हुई मेड़ो पर बोया जाता है और कूड़ों में नमी संग्रहण होता है। मेरे गांव के आसपास के क्षेत्रों के लोग जुताई - बुवाई हेतु पर्याप्त वर्षा की प्रतीक्षा कर रहे थे, और मेरे खेत में सोयाबीन बोई जा चुकी थी । एक तो वर्षा लंबी प्रतीक्षा करा रही थी, और गर्मी-उमस ने परेशान कर रखा था। फिर मैं हमेशा छिड़क कर सोयाबीन बोता था , जबकि इस बार 14-14 इंच की लंबी दूरी की कतारों में बोवनी करवा ली थी । मुझे लगा कि इस बार सोयाबीन की फसल बर्बाद हो जायेगी क्योंकि आस-पास के गांवों के मेरे परिचित किसान कह रहे थे कि मैने सोयाबीन बोने में जल्द बाजी कर ली है और मुझे पर्याप्त वर्षा तथा गर्मी कम होने की प्रतीक्षा करनी चाहिये थी। फिर 14-14 इंच की कतारों के कारण सोयाबीन बहुत विरल होने का अंदेशा था। परंतु कृषि अभियांत्रिकी विभाग सतना का कहना था कि बीज उपचारित है और उर्वरक बीज के नीचे बोया गया है। अतः चिंता की बात नहीं है। बोने के लगभग 10-12 दिन बाद खेत में सोयाबीन के अंकुर फूट पडे़ परंतु फिर भी 14-14 इंच की दूरी मुझे बहुत ज्यादा लग रही थी। संतोष सिर्फ इतना था कि गर्मी की जुताई के कारण खेतों में खरपतवार बहुत कम थी और लाईनों के बीच सोया हैण्ड वीडर चलाकर निंदाई गुड़ाई की जा सकती थी । पर फिर देखते - देखते तीन हफ्तों में ही पूरा खेत सोयाबीन से ढंक गया और जब फल्लियां लगीं तो पता चला कि इस बार का उत्पादन तो अभूतपूर्व होगा। सोयाबीन को

काट कर जब कृषि अभियांत्रिकी विभाग सतना के मल्टी क्राप थ्रेशर से गहाई करवाई तो कुल 40 क्विंटल सोयाबीन प्राप्त हुई । मेरी प्रसन्नता का ठिकाना नही रहा क्योंकि इसके पहले 12-15 क्विंटल से अधिक सोयाबीन मुझे नहीं मिल पाती थी।
(छोटे लाल वंशधारी सिंह)
ग्राम मतहा जिला सतना

तय कर ली अरहर की कठिन डगर

मैं अनंत प्रताप आत्मज श्री परमेश्वर सिंह ग्राम मतहा जिला सतना का किसान हूँ।
इस वर्ष खरीफ में कृषि अभियांत्रिकी विभाग सतना की योजनायें जब गांव में क्रियान्वित हो रही थीं , तो मैने भी उनसे गर्मी की गहरी जुताई के कार्य का लाभ लेते हुये अपने खेत जुता लिये थे। अपने 8 एकड़ के खेत में कृषि अभियांत्रिकी विभाग के रिजफरो सीड कम फर्टिलाईजर ड्रिल का प्रयोग करते हुये मैनें भी बेहतरीन सोयाबीन की फसल ली और 64 क्विंटल उत्पादन प्राप्त किया जो पिछले वर्षों से अधिक रहा। परंतु कृषि अभियांत्रिकी विभाग के रेज्.डबेड प्लांटर से मैनें तीन एकड़ खेत में अरहर की फसल लगाई थी और जुलाई में लगाई गई इस अरहर ने अनेक उतार-चढ़ाव देख्ेा। रेज्.डबेड प्लांटर से उठी हुई क्यारियों में बोई गई इस अरहर की फसल ने प्रारंभ में बहुत अच्छी वृद्धि दर्शाई। 06 अक्टूबर 2010 को कृषि राज्यमंत्री म0प्र0 शासन ने ग्राम के भ्रमण के दौरान मेरी अरहर देखकर उसकी बहुत प्रशंसा की ।

परंतु फूल आने के पहले ही मेरी अरहर में लीफरोलर का प्रकोप प्रारंभ हो गया। कृषि अभियांत्रिकी विभाग के एअरो ब्लास्टर का उपयोग कर मैने ट्राईजोफास का छिड़काव किया और कीट पर नियंत्रण पा लिया। परंतु उसके बाद जब भरपूर फूल आ गये तो लगातार सवा माह तक आसमान पर बादल छाये रहे। नतीजा ढेर सारी इल्लियों के रूप में अरहर की फसल पर मिला। फिर एअरो ब्लास्टर का उपयोग कर नीम आईल का छिड़काव

किया तथा साथ में भरपूर फूल प्राप्त करने हेतु फेन्टेक नामक पुष्प वृद्धि कारक हार्मोन का भी छिड़काव किया। जब इल्ली खत्म हुई तो अरहर पुनः भरपूर पुष्प अवस्था में आ गई और ए ेसा लगा कि अब बहुत अच्छा उत्पादन मिलेगा। परंतु जनवरी के पहले सप्ताह में जबर्दस्त तुषार (पाले) का आक्रमण फसल पर हुआ और फिर लगा कि अरहर समाप्त हो जायेगी। इस समय रेज्.डबेड प्लांटर द्वारा जो उर्वरक बीजों के नीचे बोया गया था , उसने कमाल दिखाया और पाले के आक्रमण के बाद भी अरहर पुनः जागृत हो गई और तीसरी बार पुष्पावस्था में आ गई। बार-बार की कठिनाईयों की डगर पार करके इस समय मेरे खेत में पुनः अरहर फल्लियों से लदी खड़ी है और अच्छी उपज देने जा रही है। अन्य क्षेत्रों में पाले के कारण अरहर तबाह हो गई और मुझे अरहर की बेहतर कीमत मिलने की आशा भी है।

(अनंत प्रताप सिंह परमेश्वर सिंह)
ग्राम मतहा जिला सतना

सफल रही सोयाबीन

मैं उमाकांत सिंह आत्मज श्री रंगनाथ सिंह ग्राम मतहा जिला सतना का काश्तकार हूँ। अपने गांव के गिने-चुने काश्तकारों में से हूँ जो अभी भी खेती में बैल जोड़ी का इस्तेमाल करते हैं। परंतु भारी मेहनत के बाद भी मेरे 5 एकड़ के खेतों से पर्याप्त आय प्राप्त कर घर-परिवार की जिम्मेदारी निभाना कठिन हो रहा था। इस बार भी गांव के सभी काश्तकारों के साथ-साथ मैने भी अपने खेतों की ग्रीष्म कालीन गहरी जुताई करवा ली थी , ताकि खरपतवारों से छुटकारा मिलें। अब ढाई एकड़ क्षेत्र में सोयाबीन बोनी थी। इस ढाई एकड़ खेत से पिछले साल मैने 11 क्विंटल सोयाबीन ली थी और इस बार भरपूर पैदावार देने वाली जेएस 9752 किस्म की सोयाबीन लगानी थी । कृषि अभियांत्रिकी विभाग की सहायता से रिजफरो सीड कम फर्टिलाईजर ड्रिल से सोयाबीन बोने का विचार था। वर्षा लंबी प्रतीक्षा करा रही थी , जबकि सोयाबीन की उक्त किस्म दीर्घ अवधि की होने के कारण शीघ्र बोना आवश्यक था। यद्यपि गर्मी की जुताई के कारण खेत नरम थे और बंूदा-बांदी से ही उनमें नमी आ गई थी। परंतु गर्मी कम नहीं हो रही थी और भय लग रहा था कि कहीं बीज अंकुरित ही न हों। दिल कड़ा कर बीजों को उपचारित किया और जुलाई के पहले हफ्ते में ही सोयाबीन की बोनी कर डाली। रिजफरो पद्धति में बीज उठी हुई मेड़ों पर 14-14 इंच की कतारों में बोया गया और उर्वरक बीज के नीचे बोये गये। अंकुरण में समय लगा परंतु इस बार अपने ढाई एकड़ खेत में मुझे मात्र 55 किलो बीज ही लगा। पहले छिड़काव करके बोने में 85-90 किलो बीज लगता था। खरपतवार तो गर्मी की जुताई के असर के कारण न के बराबर थे और सोया हैण्ड वीडर की मदद से कतारों के बीच निंदाई-गुड़ाई करना आसान था। तीन हफ्ते के भीतर पूरा खेत लहलहाती सोयाबीन से ढंक गया , जो अंकुरण के समय विरला-विरला लगता था। लगा कि अब चाहे कुछ भी हो, पिछले साल का 11 क्विंटल सोयाबीन तो प्राप्त हो ही जायेगा। गरीब किसान हूँ , इसलिये कटाई का कार्य स्वयं परिवार की सहायता से करता हूँ। जब फसल काट कर गहाई की तो 18 क्विंटल सोयाबीन प्राप्त हुई , जबकि दो-ढाई क्विंटल तो हाथ से कटाई के कारण खेतों में ही विखर गई

थी। यह उपज मेरी आशा से बहुत अधिक थी ओर अब मुझे विश्वास हो चुका है कि मैं अपने अढ़ाई एकड़ से 25 क्विंटल सोयाबीन भी ले सकता हूँ।

(उमाकांत सिंह रंगनाथ सिंह)
ग्राम मतहा जिला सतना

दम है खेती में

मैं विजय सिंह आत्मज श्री बद्री सिंह ग्राम मतहा जिला सतना का तीन एकड का काश्तकार हूँ। जमीन कम थी और अच्छी उपज भी नहीं मिलती थी। इसलिये ख्ेाती से मन उचट गया था और मैं समीप की ही ग्रामीण बैंक शाखा में काम करने जाने लगा। इस बार सभी लोग कृषि अभियांत्रिकी विभाग के टै्रक्टरों से गर्मी की जुताई करवा रहे थे , तो मैने भी अपने अनुपजाऊ तीन एकड़ खेत में गर्मी की गहरी जुताई करवा ली । इस बार हमारे क्षेत्र में वर्षा ने लंबी प्रतीक्षा कराई और किसान खेत जोतने-बोने के लिये पर्याप्त वर्षा की प्रतीक्षा करते रहे। प्रतीक्षा इतनी लंबी थी कि आस-पास के गांवों में आधे से अधिक खेत तो खरीफ में खाली ही पडे़ रह गये। परंतु गर्मी की जुताई के कारण मेरा खेत नरम था और प्रारंभिक बूंदा-बांदी में ही पर्याप्त नमी सोख ली थी। गर्मी बहुत थी , परंतु उपचारित सोयाबीन बोने में हर्ज नहीं था। कृषि अभियांत्रिकी विभाग की रिजफरो सीड कम फर्टिलाईजर ड्रिल उपलब्ध थी और उर्वरक को नीचे रख कर उसके ऊपर बीजों को ऊंची उठी हुई मेड़ों पर बोना था। मेड़ों के बीच बनने वाली कूड़ों में नमी संरक्षित होनी थी। सो जुलाई के पहले हफ्ते में ही पूरे तीन एकड़ में 75 किलो सोयाबीन किस्म जेएस 9305 बो दी । बीज 14-14 इंच की कतारों में बोये गये। पहले छिड़काव करके बोते समय क्विंटल- सवा क्विंटल बीज लगता था , पर इस बार बीज की तो भारी बचत हो गई थी।
खरपतवार नहीं आये। पता चला कि यह गर्मी की जुताई का असर है। निंदाई गुड़ाई
के लिये सोया हैण्ड वीडर उपलब्ध था, तो छुटृी के दिनों में गुड़ाई भी कर डाली । 20-25 दिन के भीतर तो पूरा खेत हरी-हरी सोयाबीन से ढंक गया । सोयाबीन में इस बार इतनी फल्लियां लगीं , कि पहले कभी नहीं लगी थीं। कटाई के बाद जब कृषि अभियांत्रिकी विभाग सतना के मल्टी क्राप थ्रेशर से गहाई करवाई तो 24 क्विंटल से भी अधिक सोयाबीन प्राप्त हुई । यह पिछले साल की सोयाबीन से छः क्विंटल अधिक थी। मेरे ही गांव के मथुरा सिंह , सुखेन्द्र , वीरेन्द्र सिंह के खेतों में तो ग्यारह-साढे ग्यारह क्विंटल एकड़ की सोयाबीन हुई थी। मेरा ध्यान बैंक की नौकरी और खेत की सोयाबीन में बंटा हुआ था , अन्यथा और अच्छी सोयाबीन हो सकती थी। फिर भी छः क्विंटल की अधिक फसल

अप्रत्याशित थी और मुझे अहसास हो गया कि खेती में पूरा ध्यान दिया जाये , तो खेती भी पर्याप्त दम रखती है। अब प्राप्त सोयाबीन फसल को स्पाईरल सेपरेटर से ग्रेडिंग कर रहा हूँ।
(विजय सिंह बद्री सिंह)
ग्राम मतहा जिला सतना

इस बार भायी सोयाबीन

मैं पुष्पेन्द्र सिंह आत्मज श्री रामखेलावन सिंह ग्राम मतहा जिला सतना का काश्तकार
हूँ। पिछले कुछ सालों से खरीफ में अपने दो एकड़ खेत में सोयाबीन लगाता हूँ और इनमें 10-11 क्विंटल सोयाबीन प्राप्त कर लेता हूँ। इस बार मार्च से ही कृषि अभियांत्रिकी विभाग सतना के लोग मेरे गांव में गर्मी की गहरी जुताई का कार्य कर रहे थे। मैने भी अपने खेत जुतवा लिये थे। इस गर्मी की जुताई के कारण ही मेरे नरम और नमीदार खेत समय पर सोयाबीन की बोवनी के लिये तैयार थे । अन्यथा पूरा इलाका पर्याप्त वर्षा की प्रतीक्षा कर रहा था। हमारे आस-पास के गांवों में तो आधे से अधिक खेत वर्षा की प्रतीक्षा करते - करते खाली ही रह गये।
कृषि अभियांत्रिकी विभाग ने अनुपचारित बीज बोने से इंकार कर दिया था। मैने सोयाबीन के 45 किलो बीज उपचारित कर उनके रिजफरो सीड कम फर्टिलाईजर ड्रिल से बुवाये। इस उपकरण से बीज 14-14 इंच की कतारों में बोया जाता है। उर्वरक बीजों से 1 इंच नीचे स्थापित होता है। और बीज ऊंची उठी हुई मेड़ों पर बोया जाता है। इस कारण वर्षा के कारण ऊपरी परत के सख्त हो जाने का खतरा नहीं होता है। बीज की कूडों में पर्याप्त नमी संरक्षित होती है , जो अंकुरित पौधों का पोषण करती है। गर्मी बहुत थी और बोने के बाद सप्ताह भर गुजर गया परंतु बीज नहीं अंकुरित हुये। परंतु संतोष की बात यह थी कि बीज उपचारित थे, और उनके सड़ने-गलने का भय नही था। 10 दिन गुजरते-गुजरते अंकुर फूटने लगे। खरपतवार तो गर्मी की जुताई के कारण बाकई नही थी। निंदाई-गुड़ाई के लिये सोया हैण्ड वीडर क्रय कर लिया था। 14-14 इंच की कतारों के बीच इसे आसानी से चलाया जा सकता है। 25 दिन होते-होते सोयाबीन की हरी-हरी फसल से पूरे खेत ढंक गये। पहले छिड़क कर बोते समय इसी दो एकड़ खेत में 70-75 किलो बीज बोता था। परंतु इस बार लगभग तीस किलो बीज कम बोया था। फसल पुष्ट थी और इल्ली का प्रकोप भी नगण्य था। जब फसल काट कर गहाई करवाई तो अप्रत्याशित परिणाम सामने था। मुझे 20 क्विंटल 60 किलो सोयाबीन प्राप्त हुई थी जो पिछले साल की

तुलना में साढे़ नौ क्विंटल से भी अधिक थी अब स्पाईरल सेपरेटर से इसकी ग्रेडिंग कर बेहतर कीमत प्राप्त करने वाला हूँ। इस बार तो सोयाबीन की फसल ने दिल जीत लिया।

(पुष्पेन्द्र सिंह रामखेलावन सिंह)
ग्राम मतहा जिला सतना

खेती पहले , बाकी काम बाद में

मैं रमेश सिंह आत्मज श्री हनुमान सिंह ग्राम मतहा जिला सतना का काश्तकार हूँ। काश्तकारी के अलावा भी निर्माण सामाग्री के व्यवसाय से जुड़ कर अतिरिक्त आय प्राप्त कर लेता हूँ। खेती में तो लाभ नहीं मिलता था और परंपरा निभाने के लिये ही खेती कर लेता था। पिछले बार दो एकड़ (0.809 हेक्टर) खेत में सोयाबीन लगाकर 70 किलो बीज से साढ़े नौ क्विंटल सोयाबीन पैदा की थी। परंतु इस बार अपने पूरे तीन एकड़ खेत की गर्मी की गहरी जुताई कृषि अभियांत्रिकी विभाग से करा ली थी। अतः पूरे तीन एकड़ में ही फसल लेने का निश्चय किया था। आस-पास के क्षेत्रों में काम के सिलसिले में जाता तो वहां के काश्तकार वर्षा की प्रतीक्षा करते मिलते। पर्याप्त वर्षा के बाद ही उनके खेतों की जुताई-बुवाई करना संभव था। परंतु गर्मी की जुताई के कारण मेरे खेत नरम भी थे और बंूदा-बांदी में ही उन्होने पर्याप्त नमी सोख ली थी। गर्मी कम नहीं हो रही थी , और अंकुरण पर कुप्रभाव पड़ना तय था। परंतु मेरे गांव के सभी किसान सोयाबीन का उपचार कर फटाफर बोवनी कर रहे थे। अतः मैनें भी सीड कम फर्टिलाईजर ड्रिल से सोयाबीन की बोनी करने का निश्चय किया। इस बार गांव का कोई भी किसान छिटकवां बोवनी नहीं कर रहा था और सोयाबीन की बोवनी भी 14-14 इंच की कतारों में कर रहे थे। साथ ही पहली बार दो बक्से के उपकरण बोवनी के लिये प्रयुक्त हो रहे थे , जिसमें उर्वरक बीज से इंच भर नीचे बोया जा रहा था। पहले की छिटकवा पद्धति में दो एकड़ खेत में ही मैं 70 किलो बीज बोता था । इस बार तीन एकड़ के पूरे खेत में सोयाबीन लगाने वाला था और इसके लिये उसी 70 किलो बीज को ही उपचारित कर बो दिया। अंकुरण में समय लगा, परंतु महीने भर के भीतर ही पूरा खेत पुष्ट सोयाबीन फसल से ढंक गया। आजू-बाजू के गांवों में लोगों ने वर्षा की प्रतीक्षा करते-करते हार मान कर खेत खाली ही छोड़ दिये थे, परंतु मेरे तीन एकड़ खेत में मेरे पूरे गांव के खेतों की तरह ही भरपूर फसल लहलहा रही थी। कतारों की दूरी पर्याप्त थी , अतः इल्ली का प्रकोप नियंत्रित था। गर्मी की जुताई के कारण नींदा भी नगण्य थे । और जब फसल काट कर कृषि अभियांत्रिकी विभाग के मल्टी क्राप थे्रशर से गहाई करवाई तो मैं प्रसन्न हो गया। जिन 70 किलो बीजों से पहले मैनें साढे़ नौ

क्विंटल सोयाबीन प्राप्त की थी , उन्हीं से इस बार मुझे साढे़ इक्तीस क्विंटल सोयाबीन मिली थी। यह अप्रत्याशित था। अब तो तय कर लिया है कि खेती का काम सबसे ऊपर रखूंगा। बाकी काम बाद में।
(रमेश सिंह हनुमान सिंह)
ग्राम मतहा जिला सतना

समृद्धि की सोयाबीन

मैं शिवेन्द्र सिंह तनय श्री जगदीश सिंह ग्राम मतहा जिला सतना में लगभग अढ़ाई
ए कड़ खेत का काश्तकार हूँ। जमीन कम और जिम्मेदारियां अधिक हंै। इसलिये भरपूर मेहनत कर अच्छा उत्पादन प्राप्त करने का प्रयास करता हूँ। इस खरीफ में एक एकड़ में धान लगाई थी और एक एकड़ में सोयाबीन लगानी थी। कृषि अभियांत्रिकी विभाग के टै्रक्टर उपलब्ध हो रहे थे , इसलिये पूरे खेतों की गर्मी की जुताई करवा ली थी। मुझे पता है कि खरपतवार और कीट-व्याधियों को नियंत्रित करने के लिये गर्मियों में गहरी जुताई करवा लेना चाहिये , परंतु फिर भी हमारे क्षेत्र में गर्मी की जुताई की परंपर नही है। इस बार हमारे क्षेत्र में वर्षा जुलाई के अंतिम सप्ताह में ही प्रारंभ हुई और आस-पास
के किसान जुताई-बुवाई के लिये पर्याप्त वर्षा की प्रतीक्षा ही करते रह गये। परंतु गर्मी की जुताई के कारण हमारे खेत नरम थे और प्रारंभिक हल्की-फुल्की बारिश में ही खेतों ने पर्याप्त नमी सोख ली थी। गर्मी बहुत थी , परंतु उपचारित बीज बोया जा सकता था। अतः मैनें अपने एक एकड़ खेत में जेएस 9305 का 25 किलो बीज कृषि अभियांत्रिकी विभाग की रिजफरो सीड़ कम फर्टिलाईजर ड्रिल से बो दिया । इस उपकरण में उर्वरक को बीजों के ए क इंच नीचे स्थापित किया जाता है। कतार से कतार की दूरी 14-14 इंच रखी जाती है। और बीज ऊंची उठी हुई मेड़ों पर बोया जाता है। बीच की कूड़ों में नमी संरक्षित होती है , जो अंकुरित पौधों का पोषण करती है। गर्मी के कारण अंकुरण में सप्ताह भर से भी अधिक का समय लगा। परंतु पूर्ण अंकुरण हो गया। खरपतवार हल्की-पुल्की थी और सोया हैण्ड वीडर का उपयोग कर कतारों के बीच निंदाई-गुड़ाई का कार्य मैने कर लिया। मेहनत करना तो अत्यंत आवश्यक था, क्योंकि यही फसले तो मेरी आजीविका का एक मात्र साधन थीं। कतारों के बीच की पर्याप्त दूरी के कारण सोयाबीन पर इल्ली का अधिक प्रकोप नहीं हुआ। घनी फसलों में इल्ली अधिक नुकसान पहंुचाती है। मैने भी अपने गांव के श्री मथुरा सिंह की तरह खेत में मक्के के कुछ पौधे तैयार होने दिये थे। इनके भुटृों से आकर्षित चिड़िया ने सोयाबीन की थोड़ी-बहुत इल्लियों का सफाया कर दिया। फसल काट कर जब कृषि अभियांत्रिकी विभाग के मल्टी क्राप थ्रेशर से गहाई का कार्य कराया , तो मुझे 10

क्विंटल से भी अधिक की सोयाबीन प्राप्त हुई थी । यह पिछले वर्षाें की तुलना में दो गुनी थी। इस बार धान और सोयाबीन की बहुत अच्छी फसल प्राप्त हुई । अब अच्छी आमदनी का उपयोग कर खेत में ड्रिप सिंचाई सिस्टम बिछवा लिया है। पानी की कमी है, परंतु अब तो बारहों महीनें खेत में फसल लेनी है।
(शिवेन्द्र सिंह जगदीश सिंह)
ग्राम मतहा जिला सतना